https://www.facebook.com/baranwaldirectory

अगस्त-2025

बरनवाल डायरेक्ट्री

बरनवाल समाज की हिंदी मासिक ई-पत्रिका

रक्षाबंधन, जन्माष्टमी एवं स्वतंत्रता दिवस विशेषांक

"संस्कृति, संबंध और स्वतंत्रता का उत्सव"

एक पत्रिका, तीन पर्व – भावनाओं से भरा अगस्त विशेषांक"

गायत्री मंत्र-

ॐ भुर्भुवः सः तत्सवितुर्विरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि धियो नः प्रचोदयात्।

अर्थ- उस प्राण-स्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करे।

इस अंक में
अगस्त 2025, वर्ष-1, अंक-1

सं	विषय सूची	द्वारा	पृष्ठ संख्या
1.	संपादकीय-	दीपक बरनवाल	3-4
2.	समाज की समितियां और नेतृत्व की जिम्मेदारी	मनीष कुमार(टिंकू जी) बेतिया	5
3.	अहिबरण वन्दना..!	सुभद्रा बरनवाल, धनबाद	6
4.	कविता लड़कियों के अधूरे सपनें	सलोनी आर्या, चनपटिया	6
5.	जन्माष्टमी, रक्षाबंधन एवं स्वतंत्रता दिवस पर एक विशेष संदेश	रेणुका बरनवाल, पटना	7
6.	शशांक कुमार: जिसने भारत को फिनटेक में आत्मनिर्भर बनाया	यश वर्धन, मोतिहारी	8-9
7.	रक्षा बंधन और बहनों की रक्षा का संकल्प (बरन रक्षा शिविर)	अतुल कु. बरनवाल, गाजियाबाद	10
8.	ग़ज़ल - अपना दर्द बताने में भी डर लगता है,	अनिल कु. बरनवाल, देवरिया	11
9.	कविता - भाईचारे का संदेश	प्रो. शुभ कुमार वर्णवाल, मधुबनी	11
10.	डॉ. हरीश चंद्र बर्णवाल को हार्दिक बधाई	बरनवाल डायरेक्ट्री	12
11.	सुरेंद्र बरनवाल बने भारतीय उद्योग व्यापार मंडल अयोध्या के अध्यक्ष	बरनवाल डायरेक्ट्री	12
12.	शुभकामना सन्देश	बरनवाल डायरेक्ट्री	13-15
13	हीरा - लघुकथा	शिवराम निशांत, ईसरी, झारखण्ड	16
14.	"व्हाट्सएप ग्रुप का निर्माण – समाज के उत्थान के लिए	देवरतन प्रसाद, पटना	17
15	सिर्फ अपना या दोनों का?	वर्षा निशांत, ईसरी, झारखण्ड	18
16.	बरनवाल समाज के युवाओं को समाज में करने योग्य कार्यों की सूचि	आशीष बरनवाल, बीरगंज नेपाल	19-20
17.	भव्य कावड़ यात्रा – पटना का एक ऐतिहासिक अध्याय	अनिल गुप्ता(बबलू जी) पटना	21-23
18.	समानांतर रेखाएं- कहानी	संतोष कुमार अकवि, पटना	24
19.	भारतीय युवा पीढ़ी का भटकता उद्देश्य	श्री चन्द बरनवाल, नौतनवा, उत्तर प्रदेश	25
20	सावन महोत्सव 2025- बरनवाल समाज की एकता	कोमल बरनवाल, पटना	26-27
21	"सहारा भुगतान मात्र पचास हजार... -कहानी	संजीत मोदी	28
22	अहिबरन मेघा सम्मान समारोह, गया	विक्की कुमार, गया	29
23	THE PATH OF NEVER RETURN (Long Story) PART- 01	Yash Vardhan, Motihari	30-31
24	शोक - श्रधांजलि	बरनवाल डायरेक्ट्री	32

संपादक
दीपक बरनवाल
बिस्कोमान कॉलोनी, कुम्हरार, पटना
मो० 9473303500

परामर्शदाता
चित्तरंजन भारती, पटना

विज्ञापन प्रबंधक
प्रभात बरनवाल

आप अपनी कविताएँ, लेख, कहानियाँ और सुझाव
इमेल : baranwaldirectory@gmail.com
एवं Whatsapp: 9473303500 पर भी भेज सकते है।

डिजाइनिंग और कम्पोजिंग
अमरदीप बरनवाल

संपादक मंडल
अमरेन्द्र नारायण बैंकर, पटना
रेणुका बरनवाल, पटना
आशीष कुमार, देवघर
मनीष कु. बरनवाल, बेतिया

अस्वीकरण (Disclaimer) “बरनवाल डायरेक्ट्री" में प्रकाशित सभी लेख, रचनाएँ एवं अन्य सामग्री उनके संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्ति हैं। प्रकाशित या नकल कर भेजी गई किसी भी रचना की सम्पूर्ण जिम्मेदारी रचनाकार की होगी। इन रचनाओं में व्यक्त विचार केवल लेखक के हैं, "बरनवाल डायरेक्ट्री" के नहीं।
सभी प्रकार के विवादों का निपटारा केवल पटना न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में होगा। — सम्पादक

संपादकीय: “एक समाज, एक स्वर, एक प्रयास

प्रिय पाठकों,
🙏 सप्रेम नमस्कार।

हमें अत्यंत हर्ष हो रहा है कि **“बरनवाल डायरेक्ट्री मासिक ई-पत्रिका”** के **प्रथम अंक** को हम आप सबके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं।
यह केवल एक ई-**पत्रिका** नहीं, बल्कि हमारे पूरे समाज की **आत्मा**, **विचारधारा**, **परंपरा**, **विकास** और **भविष्य की झलक** है। 📖✨

🌐 समय की माँग और हमारी दिशा

वर्तमान समय में जब —

📱 सूचना का प्रवाह तीव्र है,
⚙️ तकनीकें तेज़ी से बदल रही हैं,
🚀 और हमारी युवा पीढ़ी नई दिशा की तलाश में है,

ऐसे समय में एक **सशक्त मंच** की आवश्यकता थी —
जो समाज के हर वर्ग को जोड़े, संवाद बनाए,
विचार साझा करे और हमारी **सांस्कृतिक जड़ों** को मज़बूती दे। 🌿
इन्हीं उद्देश्यों से प्रेरित होकर, **"बरनवाल डायरेक्ट्री मासिक पत्रिका"** का जन्म हुआ।

🎯 हमारा उद्देश्य

यह पत्रिका सिर्फ समाचार देने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज के हर पहलू को छूने का एक **समग्र प्रयास** है:

📝 **लेख** – जो सोच को दिशा दें
🎙️ **कविताएं** – जो भावनाओं को स्वर दें
📚 **कहानियाँ** – जो प्रेरणा बनें
📅 **घटनाएं** – जो हमें जागरूक करें
🏆 **उपलब्धियाँ** – जो गर्व दिलाएँ
🎊 **कार्यक्रम** – जो सहभागिता बढ़ाएँ
💍 **वैवाहिक विज्ञापन** – जो रिश्तों की डोर बाँधें
🔍 **विश्लेषण** – जो भविष्य की राह दिखाएँ

यह पत्रिका समाज के हर आयु वर्ग—
👴 **बुज़ुर्गों** की सीख,
🧑‍🎓 **युवाओं** के विचार,
👩 **महिलाओं** की आवाज़,
👦 **बच्चों** की कल्पनाएं—
सबको एक साथ जोड़ने का प्रयास है।

🪞 **समाज का दर्पण – आपकी भागीदारी से**

यह पत्रिका तभी **पूर्ण** है जब इसमें आपकी **भागीदारी** हो।
हम चाहते हैं कि समाज का हर व्यक्ति इसका **सह-लेखक** बने।
👉 अपने अनुभव, विचार, सुझाव और रचनाएं भेजें।
क्योंकि यह पत्रिका **हमारी है**, **आपके लिए है** और **आपसे ही है।** 💌

यदि आपके क्षेत्र में कोई—

👤 समाजसेवी 🎓 होनहार छात्र
🎉 कोई विशेष आयोजन या उपलब्धि

है—तो हमें बताइए। हम उसे **पूरे समाज तक पहुँचाने का माध्यम** बनेंगे।

🔚 **अंत में एक विनम्र आग्रह...**

सूचनाओं से समाज बनता है, संवादों से दिशा मिलती है, और एकता से परिवर्तन आता है।

✨ "बरनवाल डायरेक्ट्री मासिक पत्रिका" ✨
आपके साथ इस यात्रा पर चलने के लिए **तैयार है**।
यह मंच आपके **विचारों का आईना** बने, यही हमारी कामना है।

भविष्य में इस पत्रिका को प्रिंट कराकर उपलब्ध कराने का प्रयास रहेगा।

👉 आपका सुझाव, सहयोग और सहभागिता ही
इस पत्रिका को मजबूती देगा।

दीपक बरनवाल

समाज की समितियां और नेतृत्व की जिम्मेदारी – एक गंभीर विचार

हमारे बरनवाल समाज में क्षेत्रीय और स्थानीय स्तर पर अनेक समितियां बनी हुई हैं, जिनका मुख्य उद्देश्य समाज को संगठित करना, युवाओं को जोड़ना, कार्यक्रमों का आयोजन करना और सामाजिक विकास के लिए कार्य करना है। लेकिन एक पुरानी और गंभीर समस्या यह है कि इन समितियों में से कई अपनी बुनियादी जिम्मेदारियों का निर्वहन समय पर और सही तरीके से नहीं करतीं।

समस्या कहां है?

1. समय पर चुनाव न होना –

संविधान और नियमावली के अनुसार, समितियों को तय समय पर चुनाव कराने चाहिए, ताकि नई सोच और नए नेतृत्व को मौका मिले। लेकिन अक्सर एक बार जो अध्यक्ष या पदाधिकारी बन जाते हैं, वे वर्षों तक पद पर बने रहते हैं, चुनाव कराने से बचते हैं।

2. बैठकों का अभाव –

मासिक बैठक समाज के कामकाज की रीढ़ होती है। वहीं कई समितियां महीनों या सालों तक बैठक तक नहीं बुलातीं, न ही समाज के मुद्दों पर चर्चा होती है।

3. गतिविधियों का ठप पड़ना –

न सदस्य जोड़े जाते हैं, न कार्यक्रम आयोजित होते हैं, न ही समाज को किसी गतिविधि की जानकारी दी जाती है। यह निष्क्रियता समाज के मनोबल को गिरा देती है।

4. निजी स्वार्थ की प्राथमिकता –

कई पदाधिकारी समिति की जिम्मेदारियों की जगह अपने निजी कार्यों में व्यस्त रहते हैं। कभी-कभी आपसी मतभेद या व्यक्तिगत संबंधों के कारण भी समिति के काम ठप हो जाते हैं।

इसका असर समाज पर-

नए युवाओं को समाज से जुड़ने, कुछ सीखने और समाज के लिए काम करने का मौका नहीं मिलता।

समाज के भीतर दो खेमे बन जाते हैं—एक पुरानी समिति के पक्ष में और एक नई समिति बनाने के पक्ष में।

आपसी एकजुटता और विश्वास कमजोर होता है।

समाज की विकास गति रुक जाती है।

नई समितियां बनाना समाधान नहीं, सुधार ज़रूरी है

जब पुरानी समिति काम नहीं करती, तो कई लोग नई समिति बनाने का प्रयास करते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि समाज दो हिस्सों में बंट जाता है और ताकत बिखर जाती है। जबकि सही तरीका यह है कि:

1. संविधान और नियमावली के अनुसार काम हो।
2. समय पर चुनाव कराकर लोकतांत्रिक ढंग से नई टीम को मौका दिया जाए।
3. मासिक बैठक अनिवार्य हो और कार्यवाही की जानकारी सार्वजनिक की जाए।
4. पदाधिकारी समाज को जवाबदेह हों, केवल पद पर बैठे न रहें।
5. सदस्यों की भागीदारी और युवाओं का प्रशिक्षण सुनिश्चित किया जाए।

समाज का विकास सिर्फ इमारतों, कार्यक्रमों या सदस्यता से नहीं, बल्कि सक्रिय और जिम्मेदार नेतृत्व से होता है। समितियां केवल नाम की न रहें, बल्कि वास्तविक रूप से समाज की धड़कन बनें।

अगर हम अपने संविधान का पालन करेंगे, समय पर चुनाव और बैठकें करेंगे, युवाओं को मौका देंगे और आपसी सहयोग को प्राथमिकता देंगे, तो न केवल हमारी समितियां मजबूत होंगी, बल्कि बरनवाल समाज की एकजुटता और ताकत भी कई गुना बढ़ जाएगी।

मनीष कुमार(टिंकू जी)
सरिसवा, बेतिया

अहिबरण वन्दना..!

इस बरण जाति के गौरव में!
फिर एक नया अध्याय जुड़े !

फिर अहिबरण के स्वागत में!
धरती पर रंग गुलाल उड़े...!

आओ उनके गौरवशाली!
इतिहास के पन्ने हम खोलें!

उस महामना की निष्ठा के!
पलड़ों में स्वंय को हम तौलें!

प्रण करें कि मन का अहम!
उनके चरणों में अर्पण होगा!

निष्ठा की ज्योति जलाकर ही!
उस देव का चिर वन्दन होगा..!

फूलों के माल्यार्पण से न हम!
कर्तव्य की समझें इतिश्री....?

जो शुष्क न हो बरसों ऐसा!
महकायें मन का मौलश्री...!

उत्थान करें अपने समाज की!
कुरीतियों को मिटायें !!

सुभद्रा बरनवाल
धनबाद

कविता लड़कियों के अधूरे सपनें

बचपन से यही सीखा की,
तुम्हें कुछ बनना है।
अपनी जिंदगी में आगे बढ़ना है।
चूल्हा-चौका की ताप से दूर,
कुंदन-सा तुम्हें निखरना है।

मैं भी थी भोली,
सपनें देखने लगी।
जगती आँखों से गढ़ने लगी।
चिड़िया जैसे घरौंदे को,
तिनका-तिनका सजाती है।
वो दिन-रात जागकर,
ख्वाबों का महल बनाती है।

मैंने भी वैसे ही अपने सजाए थे,
कितने सपनें इन आँखों में बसाए थे।
पर जैसे ही उड़ने का वक्त आया,
पंख कतरकर,
शादी की जंजीर पहनाई गयी।
ऐसे ही मेरे ख्वाबों की होली जलाई गयी।।
---00—

सलोनी आर्या,
चनपटिया, बेतिया

प्रिय बरनवाल बंधुओं,

श्रावण मास का यह पावन समय न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि पारिवारिक और राष्ट्रीय भावना से भी ओतप्रोत है। **जन्माष्टमी**, **रक्षाबंधन** और **स्वतंत्रता दिवस** — ये तीनों पर्व हमें हमारे संस्कार, संबंध और स्वाभिमान की याद दिलाते हैं।

जन्माष्टमी हमें भगवान श्रीकृष्ण की लीला, धर्म की स्थापना और सच्चाई के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। उनका जीवन संदेश देता है कि संकट चाहे जितने भी बड़े हों, धैर्य, चातुर्य और विश्वास से हर बाधा पार की जा सकती है।

रक्षाबंधन बहन-भाई के उस अटूट बंधन का उत्सव है जो सिर्फ धागे से नहीं, बल्कि प्रेम, समर्पण और विश्वास से जुड़ा होता है। यह पर्व हमें परिवार और समाज में आपसी सहयोग और सुरक्षा की भावना का स्मरण कराता है।

और **स्वतंत्रता दिवस**... यह केवल एक ऐतिहासिक दिन नहीं, बल्कि हमारे स्वाभिमान, बलिदान और एकजुटता का प्रतीक है। आज़ादी हमें विरासत में नहीं, संघर्ष और बलिदान से मिली है। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि यदि हम एकजुट हों तो कोई भी शक्ति हमें दबा नहीं सकती।

आज जब हम ये तीनों पर्व एक साथ मना रहे हैं, तो यह अवसर है **बरनवाल समाज** को फिर से एकजुट होकर आगे बढ़ने का।
🌾 हमें न केवल अपने व्यापार में बल्कि शिक्षा, तकनीक, समाजसेवा और सांस्कृतिक गतिविधियों में भी सशक्त भूमिका निभानी है।
🙏 एक-दूसरे का सहयोग करें, सम्मान करें, और अपने समाज की एकता को अपनी ताकत बनाएं।

समाज तभी आगे बढ़ता है जब हर व्यक्ति, हर परिवार मिलकर उसके विकास में योगदान देता है।

🎉 इस शुभ अवसर पर आप सभी को जन्माष्टमी, रक्षाबंधन एवं स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

जय श्रीकृष्ण! जय भारत! जय बरनवाल समाज!

रेणुका बरनवाल, पटना

शशांक कुमार: एक युवा जिसने भारत को फिनटेक में आत्मनिर्भर बनाया

आज के डिजिटल भारत में जहाँ स्टार्टअप्स देश की अर्थव्यवस्था के मजबूत स्तंभ बनते जा रहे हैं, वहीं कुछ युवा ऐसे भी हैं जो सिर्फ एक कंपनी नहीं, बल्कि एक विचारधारा खड़ी करते हैं – "आत्मनिर्भर भारत" की।

🔷 **शशांक कुमार**, Razorpay के सह-संस्थापक और मैनेजिंग डायरेक्टर, ऐसे ही युवाओं में से हैं जिन्होंने तकनीक और नवाचार के ज़रिए भारत को डिजिटल भुगतान की दुनिया में आत्मनिर्भर बना दिया।

🎓 शिक्षा और करियर की शुरुआत

बिहार से ताल्लुक रखने वाले शशांक ने **IIT रुड़की** से कंप्यूटर साइंस में स्नातक किया।
इसके बाद उनका चयन **Microsoft, USA** में हुआ। लेकिन अमेरिका की नौकरी उनका सपना नहीं था।
💡 भारत की जमीनी जरूरतें, खासकर डिजिटल पेमेंट की समस्याएं, उन्हें भीतर तक झकझोर रही थीं।
और तभी उन्होंने एक बड़ा फैसला लिया — देश लौटने का! IN

🏢 Razorpay की नींव

2014 में अपने मित्र **हर्षिल माथुर** के साथ मिलकर शशांक ने **Razorpay** की स्थापना की - 👉 एक ऐसा ऑनलाइन पेमेंट प्लेटफॉर्म जो आज लाखों व्यापारियों और स्टार्टअप्स की रीढ़ बन चुका है।

🚀 Razorpay ने छोटे दुकानदारों से लेकर Ola, Zomato, Facebook जैसी बड़ी कंपनियों तक, सभी को तेज़, सरल और सुरक्षित भुगतान सेवा प्रदान की।

💰 प्रारंभिक निवेश और उड़ान

Razorpay भारत की उन चंद कंपनियों में रही जिसे **Y Combinator** जैसे प्रतिष्ठित स्टार्टअप प्रोग्राम का हिस्सा बनने का अवसर मिला।
इसके बाद **Sequoia, Tiger Global, GIC, TCV** जैसे बड़े निवेशकों से कुल **$741.5 मिलियन** का निवेश प्राप्त हुआ।

⚙️ Razorpay 2.0 और तकनीकी विस्तार

2017 में Razorpay ने सिर्फ पेमेंट गेटवे नहीं, बल्कि एक **फुल फिनटेक प्लेटफॉर्म** बनने की ओर कदम बढ़ाया:

- 💳 **RazorpayX**: नियो-बैंकिंग समाधान
- 💼 **Razorpay Capital**: बिजनेस लोन समाधान

📲 यह बदलाव केवल तकनीकी नहीं था, बल्कि भारत के डिजिटल विकास में एक क्रांति थी।

🛒 प्रमुख अधिग्रहण और अंतरराष्ट्रीय विस्तार

शशांक कुमार के नेतृत्व में Razorpay ने अब तक 8 महत्वपूर्ण अधिग्रहण किए:

- **Ezetap** – POS समाधान
- **Thirdwatch** – AI फ्रॉड डिटेक्शन
- **Curlec (मलेशिया)** – पहला अंतरराष्ट्रीय विस्तार 🌏
- **BillMe** – डिजिटल इनवॉइसिंग

इन सभी प्रयासों ने Razorpay को न केवल भारत में बल्कि **दक्षिण एशिया** में भी स्थापित कर दिया।

🏆 सम्मान और पहचान

शशांक को कई प्रतिष्ठित पुरस्कार और मान्यता मिली:

- **🥇 EY Entrepreneur of the Year, 2022**
- **🧠 ET 40 Under 40, 2024**
- **🎓 IIT रुड़की Distinguished Alumnus**
- **🔥 Forbes 30 Under 30**
- **💼 LinkedIn Power Profile**

Razorpay

🌟 प्रेरणा और संदेश

शशांक कुमार उन युवाओं के लिए जीवंत प्रेरणा हैं जो केवल नौकरी करना नहीं, बल्कि कुछ नया "करने और बदलने" का सपना देखते हैं।

💬 उनका जीवन यही सिखाता है:

> "अगर इरादा साफ़ हो, सोच स्पष्ट हो और उद्देश्य बड़ा हो – तो भारत का कोई भी युवा वैश्विक मंच पर देश का नाम रोशन कर सकता है।" 🌏✨

https://in.linkedin.com/in/kumarshashank

Yash Vardhan
Motihari

रक्षा बंधन और बहनों की रक्षा का संकल्प (बरन रक्षा शिविर)

रक्षा बंधन भाई और बहन के प्रेम, विश्वास और सुरक्षा का पर्व है। लेकिन इसके मूल मायने क्या हैं? "रक्षा" का सही अर्थ क्या है?

पिछले रक्षा बंधन पर मेरे मन में एक विचार आया—रक्षा बंधन का असली आधार है कि हमें अपनी बहनों की रक्षा करनी है। लेकिन यह कर्तव्य केवल राखी बंधवाने, उपहार देने और मिठाई खाने तक सीमित नहीं हो सकता। आज के समय में हम अपनी बहनों को घर की चारदीवारी या गांव/मुहल्ले तक सीमित रखकर सुरक्षित नहीं रख सकते।

अगर हमें अपनी बहनों को खुलकर, निडर होकर, आकाश में उन्मुक्त उड़ान भरने की काबिलियत देनी है, तो सबसे पहले उन्हें सशक्त और आत्मरक्षा में निपुण बनाना होगा।

आज विभिन्न वीभत्स घटनाएं—लव जिहाद, मतभ्रमित करके धर्म परिवर्तन, हत्या, और बलात्कार—समाज में आम होती जा रही हैं। कोलकाता के आर.जी. कर मेडिकल कॉलेज की घटना, दिल्ली की निर्भया कांड और ऐसी हजारों घटनाएं हमें झकझोर देती हैं और बहनों की सुरक्षा को लेकर गंभीर सोचने पर मजबूर करती हैं।

सिर्फ सुरक्षा ही नहीं, हमें यह भी देखना होगा कि हमारी बहनें अपने पारिवारिक मूल्यों और सामाजिक संस्कारों से जुड़ी रहें, ताकि उन्हें सुखी और संतुलित पारिवारिक जीवन मिल सके। साथ ही हमें उन्हें ऊंची से ऊंची शिक्षा, नौकरी और व्यापार के लिए भी प्रोत्साहित करना होगा। इसके लिए उन्हें अपने घर-गांव से बाहर निकलना पड़ेगा, और वहां उनकी सुरक्षा उन्हें स्वयं करनी होगी—चाहे वह शारीरिक हो, मानसिक हो, या सनातन मूल्यों की।

इसी सोच के साथ "बरन रक्षा शिविर" का विचार जन्मा। तमाम चुनौतियों के बावजूद, श्री दीपक बरनवाल (हिसुआ) और उनकी टीम ने हिसुआ में 60 बहनों के लिए एक सप्ताह का शिविर आयोजित किया। इस प्रशिक्षण ने बहनों में आत्मविश्वास जगाया, आत्मरक्षा के प्रति सक्षम बनाया और साथ ही संस्कारों के प्रति उनका रुझान भी बढ़ाया।

वहीं, मऊ और मीरजापुर (उत्तर प्रदेश) में शिविर का आयोजन कुछ कारणों से न हो सका, लेकिन जागरूकता इतनी बढ़ी कि वहां लगभग 50 बहनों को अन्य शिविरों में प्रशिक्षण दिलाया गया।

इस रक्षा बंधन पर, मैं पुनः सभी बंधुओं से आग्रह करता हूं कि रक्षा बंधन की मूल भावना को समझें—केवल प्रतीकात्मक नहीं, बल्कि वास्तविक सुरक्षा और सशक्तिकरण की ओर कदम बढ़ाएं। आइए, अपने-अपने क्षेत्रों में बरन रक्षा शिविर आयोजित करें और अपनी बहनों को न सिर्फ़ सुरक्षित, बल्कि आत्मनिर्भर बनाएं।

सादर

अतुल कुमार बरनवाल

गाजियाबाद

गज़ल

अपना दर्द बताने में भी डर लगता है,
बहुतों को तो यह अपना घर लगता है।

मूलभूत स्वास्थ्य व शिक्षा का मूल नदारद,
लगता अब हर सांसों पर उपकर लगता है।

रोजगारोन्मुखी शिक्षा गुम, कालेजों का भण्डार,
माफिया-नेता को धन अर्जन अवसर लगता है।

महंगी है पेट्रोल,उस पर सस्ता लोगों का जीवन,
अब तो हर सड़कों पर ही महंगा कर लगता है।

नालियों की नहीं सफाई, सड़क पर बेशुमार गड्ढे,
सुविधा नगण्य तो गृहकर संग जलकर लगता है।

प्यार करो, पर ना रखो, छल-खल की गुंजाइश,
भटकी लड़की को लव जिहाद स्वयंवर लगता है।

सुकून तलाशे, दिन का चैन, दूर रात की बेरहमी,
निंदिया ना आए तो बिस्तर अजगर लगता है।

इन्सानियत अब कम मुखौटे ज्यादा हैं 'अनिल',
मिल जाए असली हमदम तो पुष्कर लगता है।

अनिल कु. बरनवाल
देवरिया

कविता भाईचारे का संदेश

भाईचारे का संदेश राखी
रक्षा का त्योहार।
राखी भाई-बहनों का प्यार।

श्रावण मास दिवस पूर्णिमा
रक्षाबंधन आता हर वर्ष।
नव उत्साह सत्कार।
राखी भाई-बहनों का प्यार...।।1

हिन्दू धर्म में प्रचलित राखी
सभी धर्मों के लोग मनाते।
प्रेम-प्रगाढ़ फुहार।
राखी भाई-बहनों का प्यार।।2

युगों-युगों से रक्षाबंधन
भाईचारे का प्रतीक बंधन।
रक्षा सूत्र हजार।
राखी भाई-बहनों का प्यार।।3

राखी देश सुरक्षा संकल्प
रक्षा प्रकृति पर्यावरण हित।
हित रक्षा संसार।
राखी भाई-बहनों का प्यार।।4

वामन रूप धर विष्णु
आये राजा बलि से भिक्षा पाये।
समक्ष रहूँ स्वीकार।
राखी रक्षा का त्योहार।।5

राजा बलि से मिलकर
लक्ष्मी राखी बांधी भाई बनाई।
विष्णु पाई उपहार।।
राखी रक्षा का त्योहार।।6

प्रो. शुभ कुमार वर्णवाल
मधुबनी

डॉ. हरीश चंद्र बर्णवाल को हार्दिक बधाई

अपने व्यस्ततम दायित्वों, जिम्मेदारियों और कार्यभार के बावजूद, हरीश चंद्र बर्णवाल जी ने पीएच.डी. की पढ़ाई पूरी कर यह सिद्ध कर दिया कि समर्पण, अनुशासन और मेहनत से कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं होता।

अब उन्हें सम्मानपूर्वक कहा जाएगा — डॉ. हरीश चंद्र बर्णवाल।

हरीश जी न केवल मीडिया जगत का एक जाना-पहचाना नाम हैं, बल्कि साहित्य, संगीत और संस्कृति में भी उन्होंने अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है। उन्होंने अब तक आठ पुस्तकें लिखी हैं और सौ से अधिक गीतों का निर्माण किया है।

उनके योगदान को भारत सरकार और विभिन्न संस्थानों द्वारा भी सम्मानित किया गया है। उन्हें भारतेंदु हरिश्चंद्र पुरस्कार और दिल्ली सरकार की हिन्दी अकादमी सहित कई पुरस्कार मिल चुके हैं। इस शैक्षणिक उपलब्धि पर उन्हें हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

उनकी यह उपलब्धि आज की युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत है — कि लगन हो तो कोई भी सपना अधूरा नहीं रहता।

https://www.youtube.com/c/harishburnwal

भारतीय उद्योग व्यापार मंडल का पुनर्गठन: अयोध्या नगर को मिला नया अध्यक्ष

सुरेंद्र बरनवाल को सौंपी गई जिम्मेदारी, व्यापारियों में उत्साह

भादर (अमेठी), 1 अगस्त:

भारतीय उद्योग व्यापार मंडल के भादर ब्लॉक के अंतर्गत आयोजित पुनर्गठन कार्यक्रम में सुरेंद्र बरनवाल को अयोध्या नगर अध्यक्ष नियुक्त किया गया। इस अवसर पर व्यापारियों में उत्साह और संगठन में नई ऊर्जा का संचार देखने को मिला। कार्यक्रम में प्रदेश महामंत्री रविंद्र त्रिपाठी ने माल्यार्पण कर उपस्थित व्यापारियों का स्वागत किया और संगठन की मजबूती पर बल दिया। अयोध्या मंडल प्रभारी हरकेश श्रीवास्तव ने व्यापारियों से आह्वान किया कि वे एकजुट होकर समाज के हित में कार्य करें। जिला उपाध्यक्ष दीपक अग्रहरि ने अपने संबोधन में नवनियुक्त अध्यक्ष को शुभकामनाएं दीं और भरोसा दिलाया कि वे सदैव व्यापारियों के साथ खड़े रहेंगे।

इस कार्यक्रम में प्रदेश महामंत्री रविंद्र जायसवाल, जिला अध्यक्ष सियाराम वैश्य, संगठन प्रभारी सत्येंद्र गुप्ता समेत अनेक पदाधिकारी और व्यापारी मौजूद रहे। कार्यक्रम व्यापारियों की एकता, संगठन की शक्ति और सुरेंद्र बरनवाल के नेतृत्व में नई दिशा की उम्मीद का प्रतीक बना।

शुभकामना संदेश

केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल जी के निजी सचिव (Private Secretary) नियुक्त किए गए वरुण बरनवाल

बरनवाल वरुण कुमार जगदीश को केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल (वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय) का निजी सचिव (Private Secretary) नियुक्त किया गया है। वे 2014 बैच के गुजरात कैडर के IAS अधिकारी हैं।

बरनवाल समाज के लिए यह एक गर्व का क्षण है। उन्हें हार्दिक शुभकामनाएं एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना।

सुजल कुमार (रानू) की सफलता – समाज का गर्व

नवादा (बिहार): बरनवाल वैश्य महासभा, बिहार प्रदेश के कोषाध्यक्ष श्री सविनय कुमार जी के कनिष्ठ पुत्र श्री सुजल कुमार (रानू) ने भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेंट संस्थान (ICAI) द्वारा आयोजित CA फाइनल परीक्षा सफलतापूर्वक उत्तीर्ण कर समाज को गौरवान्वित किया है। वर्तमान में वे DUROFLEX Mattress, बेंगलुरु में कार्यरत हैं।

यह उपलब्धि न केवल व्यक्तिगत सफलता है, बल्कि पूरे बरनवाल समाज के लिए प्रेरणा है। सुजल ने यह सिद्ध किया है कि लगन, अनुशासन और परिश्रम से कोई भी लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

समस्त बरनवाल परिवार की ओर सेश्री सुजल कुमार (रानू)तथा उनके माता-पिता कोहार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

आपकी यह सफलता युवा पीढ़ी को आत्मविश्वास और दिशा देगी। – बरनवाल समाज, नवादा

विवेक बरनवाल की सफलता – समाज का गौरव

विवेक बरनवाल की सफलता – समाज का गौरवहमें यह बताते हुए अत्यंत हर्ष है कि बरनवाल सेवा समिति, बनगाँव (पश्चिम बर्दवान, पश्चिम बंगाल) के माननीय सचिव श्री ओंकार बरनवाल जी के सुपुत्र विवेक बरनवाल जी ने झारखंड लोक सेवा आयोग (JPSC) परीक्षा में 116वीं रैंक प्राप्त कर परिवार, समाज और जिले को गौरवान्वित किया है।यह उपलब्धि उनकी मेहनत, संकल्प और संस्कारों का परिणाम है।उनकी इस सफलता पर उन्हें और उनके परिवार कोहार्दिक बधाई और उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।बरनवाल समाज को आप पर गर्व है। विवेक जी जैसे युवा समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं।

JPSC चयन – आपके सहयोग और आशीर्वाद का परिणाम

माता रानी की कृपा और आप सभी के आशीर्वाद से यह साझा करते हुए हर्ष हो रहा है कि मेरा चयन झारखंड लोक सेवा आयोग (JPSC) में Labour Superintendent Officer पद पर 167वीं रैंक के साथ हुआ है।
यह सफलता केवल मेरी नहीं,मेरे माता-पिता के आशीर्वाद,भाई-भाभी और दीदी-जीजाजी के विश्वास,और मेरी पत्नी के निरंतर सहयोग और समर्थन का फल है,जो हर मोड़ पर मेरी ताकत बनी रहीं। आप सभी के प्रेम, विश्वास और प्रेरणा के लिए धन्यवाद।आपका साथ और आशीर्वाद ऐसे ही बना रहे।यह तो एक शुरुआत है, आगे का सफर अभी बाकी है।

गिरिडीह के रंजन कुमार: बिना कोचिंग, पहले प्रयास में JPSC में सफलता

गिरिडीह जिले के रंजन कुमार ने यह साबित कर दिया कि अगर इरादा मजबूत हो तो संसाधनों की कमी भी रास्ता नहीं रोक सकती। बिना किसी कोचिंग के, पहली ही कोशिश में उन्होंने 205वीं रैंक के साथ झारखंड लोक सेवा आयोग (JPSC) परीक्षा पास कर ली।साधारण परिवार, असाधारण हौसला- आर्थिक रूप से सीमित संसाधनों के बीच पले-बढ़े रंजन कुमार ने कठिनाइयों को पीछे छोड़ते हुए यह सफलता अर्जित की। उनकी इस उपलब्धि से न केवल उनके परिवार, बल्कि पूरे गिरिडीह और बरनवाल समाज को गर्व है।

प्रेरणा बने युवाओं के लिए- आज रंजन कुमार समाज के युवाओं के लिए एक प्रेरणास्त्रोत बन चुके हैं।उनकी मेहनत और आत्मविश्वास से यह संदेश मिलता है कि यदि लगन हो, तो कोई भी लक्ष्य दूर नहीं।

समाजसेवियों ने किया सम्मानित- रंजन की सफलता पर कई सामाजिक संगठनों और समाजसेवियों ने उन्हें सम्मानित कर उनके हौसले को और बुलंद किया। उनके इस सफर ने यह सिद्ध कर दिया है कि सच्ची मेहनत कभी व्यर्थ नहीं जाती। **"संघर्ष से सफलता तक – यह सिर्फ शुरुआत है!"**

अंकित कुमार का चयन: बरनवाल समाज को गर्व

श्री अंकित कुमार, पिता स्व. पवन वर्णवाल, ग्राम भेलवाटांड (डोमचांच, कोडरमा) का झारखंड प्रशासनिक सेवा में अंतिम चयन होना पूरे समाज और जिले के लिए गर्व की बात है।उन्होंने 19वीं रैंक प्राप्त कर यह सिद्ध किया कि मेहनत, संकल्प और अनुशासन से कोई भी ऊँचाई पाई जा सकती है।

इस सफलता पर हम स्व. पवन वर्णवाल जी को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए अंकित कुमार और उनकी माता जी को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं देते हैं।आपकी यह उपलब्धि समाज के युवाओं के लिए प्रेरणा बनेगी।बरनवाल समाज को आप पर गर्व है।

भारतीय जनता महिला मोर्चा, नवादा ज़िला का जिला अध्यक्ष

श्रीमती माधुरी बरनवाल को जिला अध्यक्ष नियुक्ति पर हार्दिक बधाई

हमें गर्व और प्रसन्नता है कि श्रीमती माधुरी बरनवाल जी को भारतीय जनता महिला मोर्चा, नवादा ज़िला का जिला अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। यह नियुक्ति नारी शक्ति के सम्मान और नेतृत्व क्षमता की पहचान है। आपकी कर्मठता, निष्ठा और सामाजिक योगदान ने यह सिद्ध किया है कि संगठित प्रयास से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। हम विश्वास करते हैं कि आपके नेतृत्व में नवादा ज़िले मेंमहिला सशक्तिकरण को नई दिशा और संगठन को नई ऊँचाइयाँ प्राप्त होंगी।

आपको इस गरिमामयी उत्तरदायित्व के लिएहार्दिक बधाई और सफल कार्यकाल की शुभकामनाएँ।

सादर, बरनवाल समाज – नवादा एवं समस्त शुभचिंतकगण

Advertisement

Since 1987

BHARTIYA FINANCIAL SERVICES

Flat, Land & Property Broker

Mob. : 94310 63692, 82101 73906 Email : anupbhartiya@rediffmail.com

LIC | HDFC MUTUAL FUND | ICICI PRUDENTIAL MUTUAL FUND | UTI Mutual Fund | MAX Bupa HEALTH INSURANCE | LIC MUTUAL FUND | SBI MUTUAL FUND | RELIANCE MUTUAL FUND | भारतीय डाक Indian Post | LIC's HEALTH PLUS

All Mutual Fund & Bonds Services

जैसे आप अपने अच्छे स्वास्थय के लिये हर रोज पार्क जाते है, व्यायाम करते है, योगा करते है या सैर करते है। उसी तरह आप अपने धन के अच्छे स्वास्थ्य के लिये हर महीने थोड़ा-थोड़ा निवेश करें। सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान में

Systematic Investment Plan

SIP
छोटा शब्द
बड़ा असर

छोटी बचत
छोटा निवेश
बड़ा फायदा

Anup Kumar Bhartiya
(LIC CLIA, MDRT)
Chairman Club Member
Financial Advisor
30 Year Experience

हेल्थ इन्सुरेंस जीवन की जरूरत है, कल नहीं आज ही लें। समझने के लिए सम्पर्क करें।
नोट :- अगर आपको किसी भी इन्सुरेंस कम्पनी में जमा की गई रकम निकलने या क्लेम के भुगतान में दिकत ही तो एक बार जरुर संपर्क करें।

- हीरा

एक बार एक राज-महल में कामवाली बाई का लड़का खेल रहा था। खेलते खेलते उसके हाथ में एक हीरा आ गया, वो दौड़ता दौड़ता अपनी माँ के पास ले गया। माँ ने देखा और समझ गयी कि ये हीरा है तो उसने झूठमुठ का बच्चे को कहा कि ये तो कांच का टुकड़ा है और उसने उस हीरे को महल के बाहर फेंक दिया।

और थोड़ी देर के बाद वो बाहर से हीरा उठा कर चली गयी। उसने उस हीरे को एक सोनार को दिखाया। सोनार ने भी यही कहा ये तो कांच का टुकड़ा है और उसने भी बाहर फेंक दिया। वो औरत वहां से चली गयी। बाद में उस सोनार ने वो हीरा उठा लिया और जौहरी के पास जाकर हीरा दिखाया।

जौहरी को पता चल गया कि ये तो एक नायाब हीरा है। उसकी नियत बिगड़ गयी और उसने भी सोनार को कहा कि ये तो कांच का टुकड़ा है और उसने उठा के हीरे को बाहर फेंक दिया और बाहर गिरते ही वो हीरा टूट कर बिखर गया!

एक आदमी इस पूरे वाकये को देख रहा था। उसने जाकर हीरे से पूछा, “जब तुम्हे दो बार फेका गया तब नहीं टूटे और तीसरी बार क्यों टूट गए?”

हीरे ने जवाब दिया, “ना वो औरत मेरी कीमत जानती थी और ना ही वो सोनार। मेरी सही कीमत तो वो जौहरी ही जानता था। और उसने जानते हुए भी मेरी कीमत कांच की बना दी, बस मेरा दिल टूट गया और मैं टूट के बिखर गया!”

जब किसी इंसान की असली कीमत जानते हुए भी लोग उसे नाकारा कह देते हैं, तो वह भी हीरे की तरह बिखर सकता है और कभी आगे नहीं बढ़ पाता।

इसलिए, अगर आपके आसपास कोई भाई, बहन, बेटी, बहू या कोई भी इंसान अपने हुनर को निखारते हुए आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा है, तो उसका हौसला बढ़ाइए, उसे समर्थन दीजिए। और अगर आप यह नहीं कर सकते, तो कम से कम उसे 'कांच' कहकर तोड़ने का काम मत कीजिए। याद रखिए—हीरा, एक दिन, अपनी असली जगह खुद ले ही लेता है।

शिवराम निशान्त
सम्पादक, आह्वान

"व्हाट्सएप ग्रुप का निर्माण – समाज के उत्थान के लिए हो!"

🙏 "व्हाट्सएप ग्रुप का निर्माण – सिर्फ सूचना के लिए नहीं, समाज के उत्थान के लिए हो!"

आज बरनवाल समाज के कई WhatsApp ग्रुप बन चुके हैं।

यह अच्छी बात है —

✔ हमें सूचनाएं मिल रही हैं,

✔ घटनाओं की जानकारी पहुँच रही है,

✔ समाज की समस्याओं का अहसास हो रहा है।

परंतु मेरा एक सजग और सकारात्मक सुझाव है...

💡 क्यों न हम इन WhatsApp ग्रुपों को "सामाजिक चेतना" का मंच बना दें?

🧠 जहाँ सिर्फ संदेश न आएँ, बल्कि समाधान की सोच विकसित हो।

🎯 क्या हो सकते हैं ग्रुप के सकारात्मक उपयोग?

1️⃣ समाज के प्रतिभाशाली बच्चों की जानकारी साझा हो

2️⃣ शिक्षा, रोजगार, स्टार्टअप और स्वरोजगार से जुड़ी सलाह दी जाए

3️⃣ वैवाहिक सूचना और संपर्क हेतु भरोसेमंद माध्यम बने

4️⃣ समाज के बुजुर्गों का अनुभव, युवाओं की ऊर्जा – दोनों का समन्वय हो

5️⃣ ज़रूरतमंद परिवारों की मदद के लिए सामूहिक प्रयास हो

📌 "सिर्फ खबरें शेयर करने से नहीं, विचारों के निर्माण से समाज आगे बढ़ता है।"

🤝 आइए, हम सभी मिलकर WhatsApp जैसे छोटे प्लेटफॉर्म को बड़ा सामाजिक परिवर्तन लाने का माध्यम बनाएं।

🎉 एकजुटता में ही शक्ति है, और संगठन में ही उन्नति है।
🙏 आपका सहयोग ही समाज का भविष्य तय करेगा।
देवरतन प्रसाद, पटना

सिर्फ अपना या दोनों का?

शाम को पति ने पत्नी को फोन किया—
"शाम को मेरे परिवार के लोग आ रहे हैं, तुम कुछ अच्छा सा बना लेना।"
पत्नी तुनककर बोली—
"मुझसे नहीं होगा इतना सब! तुम उन्हें किसी होटल में ले जाओ और वहीं से विदा कर देना।"
पति ने समझाने की कोशिश की—
"तुम मुझे उनके साथ नहीं रहने देती, मगर साल में एक बार तो उन्हें सहन कर लो।"
पत्नी ने कोई जवाब नहीं दिया।
रात आठ बजे घर की डोरबेल बजी। पत्नी ने दरवाजा खोला तो आश्चर्यचकित रह गई—गेट पर उसके माता-पिता, भाई-भाभियां और उनके बच्चे खड़े थे!
उसने खाने में कुछ भी नहीं बनाया था, क्योंकि उसे लगा था कि पति के परिवार वाले आने वाले हैं।
घबराकर उसने तुरंत पति को फोन किया—
"कहां हो? अभी तक ड्यूटी से घर क्यों नहीं आए? तुमने पहले क्यों नहीं बताया कि मेरे परिवार वाले आ रहे हैं? अब उन्हें इतनी रात को क्या बनाकर खिलाऊं? मैं तो बाजार से कुछ भी नहीं लाई। तुम ऐसा करो, अभी होटल से कुछ लेकर घर पहुंचो।"
पति ने शांत स्वर में जवाब दिया—
"जो घर में है, वही खिला दो। मैं शहर में नहीं हूं। मैंने अपने परिवार के साथ चार दिन का घूमने का प्लान बनाया है और अभी हिल स्टेशन के होटल में हूं।"
"तुझे सबक सिखाने के लिए मैंने ही तुम्हारे परिवार को सरप्राइज पार्टी के लिए बुलाया है। उन्हें ज्यादा कुछ मत बताना, वरना मैं सारी पोल खोल दूंगा। अपने परिवार के साथ इंजॉय करो, मैं भी कर रहा हूं।"
फिर एक गहरी बात कहकर फोन काट दिया—
"एक बात याद रखना—जब तक मेरे परिवार को अपना नहीं समझोगी, मैं भी तुम्हारे परिवार को अपना नहीं समझूंगा। चार दिन बाद मिलते हैं... बाय!"

वर्षा निशान्त
ईसरी

बरनवाल समाज के युवाओं के पास आज **ज्ञान, तकनीक, शिक्षा और जोश** है। अगर इसे **सही दिशा** दी जाए, तो **समाज में सकारात्मक बदलाव** लाया जा सकता है। नीचे **बरनवाल समाज** के **युवाओं के लिए 10 महत्वपूर्ण कार्य** सुझाए गए हैं, जो वे **समाज और समाज** के लिए कर सकते हैं:

🌱 1. शिक्षा जागरूकता अभियान

✅ समाज में शिक्षा के महत्व को समझाएं
✅ गरीब या पिछड़े वर्ग के बच्चों की पढ़ाई में सहयोग करें
✅ कोचिंग, सेमिनार, स्कॉलरशिप जानकारी बांटें
🎯 लक्ष्य: हर बच्चा पढ़े, आगे बढ़े

🧑‍💼 2. करियर मार्गदर्शन शिविर (Career Guidance)

✅ 10वीं–12वीं और कॉलेज छात्रों को सही करियर विकल्पों की जानकारी दें
✅ सरकारी नौकरी, स्टार्टअप, डिजिटल स्किल्स पर मार्गदर्शन दें
✅ समाज के सफल लोगों से जुड़कर "मॉडल रोल" पेश करें
🎯 लक्ष्य: भटकाव नहीं, मार्गदर्शन मिले

💼 3. स्वरोज़गार / उद्यमिता प्रोत्साहन

✅ युवाओं को व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रेरित करें
✅ नेटवर्किंग करें, लघु उद्योग / MSME जानकारी साझा करें
✅ "बरनवाल बिजनेस नेटवर्क" जैसे प्लेटफॉर्म बनाएं
🎯 लक्ष्य: नौकरी खोजने वाला नहीं, नौकरी देने वाला बनो

👴 4. बुजुर्गों और विधवाओं की सेवा

✅ समाज के बुजुर्गों का सम्मान करें
✅ उनका अनुभव समाज के युवाओं से साझा कराएं
✅ जरूरतमंदों के लिए मेडिक्लेम / हेल्थ चेकअप कैंप चलाएं
🎯 लक्ष्य: हमारे जड़ों को मजबूत रखना

👦 5. बाल संस्कार व नैतिक शिक्षा वर्ग

✅ बच्चों को समाज, संस्कृति और आचरण की शिक्षा दें
✅ रामायण, गीता, नैतिक कहानियों की कक्षाएं शुरू करें
✅ बच्चों में नेतृत्व कौशल और आत्मविश्वास बढ़ाएं
🎯 लक्ष्य: अच्छे इंसान बनाना

📲 6. डिजिटल साक्षरता अभियान

✅ ग्रामीण क्षेत्र के समाजजन को डिजिटल दुनिया से जोड़ें
✅ ऑनलाइन बैंकिंग, सरकारी योजनाएं, ऐप्स की जानकारी दें
✅ बुजुर्गों को स्मार्टफोन उपयोग सिखाएं
🎯 लक्ष्य: डिजिटल युग में समाज को पीछे न रहने दें

🌳 7. पर्यावरण और स्वास्थ्य अभियान

✅ पौधारोपण, सफाई अभियान, प्लास्टिक मुक्त मोहल्ला
✅ रक्तदान, स्वास्थ्य शिविर, योग क्लास
✅ सामाजिक त्योहारों को पर्यावरण के साथ जोड़ें
🎯 लक्ष्य: स्वस्थ समाज, स्वच्छ समाज

👫 8. समाज को जोड़ने वाले कार्यक्रम

✅ खेलकूद प्रतियोगिता, सांस्कृतिक कार्यक्रम
✅ सामूहिक विवाह, होली-मिलन, दीपावली मिलन
✅ "बरनवाल यूथ मीट" जैसी पहल
🎯 लक्ष्य: जुड़ाव और आत्मीयता

🧠 9. समाज में सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ काम

✅ दहेज प्रथा, दिखावा, जातिवाद जैसे मुद्दों पर चर्चा और समाधान
✅ प्रेरक पोस्ट, वीडियो, नाटक के माध्यम से जागरूकता
✅ समाज सुधारकों को सम्मानित करें
🎯 लक्ष्य: आधुनिक सोच, मजबूत समाज

🤝 10. समाज के लिए नेटवर्किंग और सहयोग प्लेटफ़ॉर्म बनाना

✅ WhatsApp/Telegram/Facebook पर "बरनवाल युवा मंच"
✅ मदद के लिए हेल्पलाइन, स्कॉलरशिप बैंक, जरूरतमंद सूची
✅ समाज में "Give Back" की भावना पैदा करें
🎯 लक्ष्य: जब हम मिलेंगे, तब ही हम बदलेंगे

📌 निष्कर्ष:

बरनवाल समाज के युवाओं के पास **कर्म, कलम और तकनीक की ताकत** है।

अगर हम **संगठित** होकर चलें, तो **समाज में बदलाव** सिर्फ सपना नहीं, **सच्चाई बन** सकता है।

आशीष बरनवाल
बीरगंज नेपाल

भव्य कावड़ यात्रा – एक ऐतिहासिक अध्याय

पटना बरनवाल महासभा, पटना महानगर द्वारा आयोजित
📅 **दिनांक – 3 अगस्त 2025**
📍 **स्थान – कृष्णा घाट से महामृत्युंजय मंदिर तक**

🙏 **हर-हर महादेव... बम-बम भोले... ओम् नमः शिवाय** की गूंज के साथ **3 अगस्त 2025** को **पटना बरनवाल महासभा, पटना महानगर** द्वारा एक **भव्य कावड़ यात्रा** का आयोजन किया गया, जिसने पूरे **पटना शहर** को **भक्ति, अनुशासन और सामाजिक एकता** की शक्ति से भर दिया।

🚩 आस्था का अद्वितीय संगम:

इस पावन अवसर पर सैकड़ों की संख्या में **बरनवाल परिवार** के **वृद्ध, महिलाएं, युवा, बच्चे-बच्चियां** एक साथ **कृष्णा घाट** पर एकत्र हुए।
सभी ने **गंगाजल से भरे कावड़** को कंधे पर उठाकर **बाबा भोलेनाथ** के चरणों में अर्पित करने का संकल्प लिया।

🛤 यात्रा का मार्ग:

📍 कृष्णा घाट → अशोक राजपथ → खजांची रोड → मछुआ टोली → दिनकर गोलंबर → नाला रोड → कांग्रेस मैदान → महामृत्युंजय मंदिर
जहाँ सभी श्रद्धालुओं ने **बाबा भोलेनाथ** का **जलाभिषेक** कर समाज और विश्व के मंगल की कामना की।

🔔 भक्ति, अनुशासन और उत्साह का संगम:

यह यात्रा केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि **बरनवाल समाज की एकता**, **अनुशासन** और **भावनात्मक जुड़ाव** का **जीवंत उदाहरण** थी।

🔊 एक स्वर में गूंजती आवाज़ें:

"बोल बम... ओम् नमः शिवाय... बाबा एक सहारा!"
यह केवल नारा नहीं था, यह समाज की **एकजुटता का घोष** था।

सैकड़ों श्रद्धालु **अनुशासन** के साथ मार्ग में बढ़ते गए।
नगरवासियों ने भी **आश्चर्य और हर्ष** के साथ इस दृश्य का **स्वागत** किया।

🤝 आयोजन की सफलता में जिन्होंने निभाई अहम भूमिका:

इस सफल आयोजन में **पटना महानगर बरनवाल महासभा** के सभी पदाधिकारियों एवं परिजनों का विशेष योगदान रहा:

- 🧿 **अध्यक्ष: श्री जयशंकर प्रसाद**
- 🧿 **सचिव: श्री अनिल कुमार गुप्ता**
- 🧿 **कोषाध्यक्ष: श्री सुनील कुमार**
- 🧿 **उपाध्यक्ष: श्री दीपक बरनवाल**
- 🧿 **सह - सचिव: श्री विवेक हर्ष**
- 🧿 **बरन कन्या के अध्यक्ष – श्री सुनील कुमार (गुड्डू)**
- 🧿 **उपाध्यक्ष – श्री संजय बरनवाल**
- 🧿 **बरनवाल भवन न्यास के सचिव – श्री रवि कुमार**
- 🧿 **राष्ट्रीय महिला समिति की उपाध्यक्ष – कोमल बरनवाल**

साथ ही **कार्यकारिणी के सभी सदस्य**, और समाज के **प्रत्येक परिवार** ने **तन-मन-धन से सहयोग** किया।
बरनवाल भवन न्यास, **बरन कन्या न्यास** एवं **बरनवाल प्रबुद्ध महिला समिति** का भी **सक्रिय सहयोग** रहा।

🏛️ बरनवाल भवन न्यास का सक्रिय सहयोग:

कार्यक्रम के समापन पर सभी श्रद्धालु **बरनवाल भवन** में एकत्रित हुए,
जहाँ सभी ने **जलपान** किया गया।
इसके पश्चात सभी ने **बाबा भोले का जयकारा** करते हुए
समाज, राष्ट्र और विश्व की मंगलकामनाओं के साथ
अपने-अपने **गंतव्य** की ओर प्रस्थान किया।

कावड़ यात्रा

🙏 कृतज्ञता एवं बधाई:

इस ऐतिहासिक आयोजन को सफल बनाने वाले **प्रत्येक सदस्य, परिवार, युवा एवं बुजुर्ग** को **पटना बरनवाल महासभा, पटना महानगर हृदय से धन्यवाद एवं बधाई** देती है।

भक्ति, अनुशासन और आस्था से सजी कांवड़ यात्रा की झलकियाँ

धन्यवाद

अनिल कुमार गुप्ता

सचिव

पटना बरनवाल महासभा, पटना महानगर

सामने की बर्थ पर बैठे इंसान को देखकर लगा, जैसे मेरी धड़कन रुक जाएगी। एक पल को लगा जैसे वो कोई और है, पर नहीं—मैं उसे पहचानने में कभी गलती नहीं कर सकती।

कभी जिसके साथ जीवन गुज़ारने के सपने देखती थी, वो इस तरह जीवन से बाहर हो जाएगा, इसकी कल्पना भी नहीं की थी।

जीवन बड़ा निष्ठुर होता है—उसे किसी की योजनाओं, सपनों, उम्मीदों से कोई सरोकार नहीं होता। वो तो बस विधाता की तय की हुई नियति के हिसाब से चलता है—न उसे किसी की खुशियों की चिंता होती है, न किसी के आँसुओं की परवाह।

कितना प्यार करती थी मैं इस इंसान को! लड़कपन में मेंहदी में जिसके नाम का पहला अक्षर हथेली में छुपाकर लिखती थी, वो नाम मेरी हथेली की रेखाओं में नहीं है—तब कहां जान पाई थी।

उम्र ने उसके चेहरे पर बहुत फर्क नहीं डाला था। हाँ, सिर के बालों में थोड़ी सफेदी आ गई थी, पर वो भी जैसे इस सुंदर चेहरे को गरिमापूर्ण ही बना रही थी। उसकी तुलना में मुझमें ही अधिक बदलाव आ गया था—मैं मोटी हो गई थी, चेहरे पर झुर्रियां आ गई थीं।

मन में आया—भले विधाता मेरी उम्र के एक-दो साल कम न करे, पर बस एक क्षण के लिए मुझे फिर से वैसी ही सुंदर बना दे, जैसी उसने मुझे आखिरी बार देखा था। अपने पति से संतुष्ट, सफल और सुखद वैवाहिक जीवन जी रही, दो बच्चों की माँ अपने पूर्व-प्रेमी के सामने असुंदर नहीं दिखना चाहती थी—यह खयाल आते ही मैं कांप गई।

विधाता को जब हमें मिलाना ही नहीं था, तो मिलाया क्यों? और जब उसने हमें नहीं मिलाया, तो आज इस तरह क्यों मिला दिया? विधाता को भी क्यों दोष दूँ—अलग होने का निर्णय मेरा ही था।

पिताजी ने मेरा रिश्ता आलोकजी से तय कर मेरी सहमति जाननी चाही थी। यह सब इतना अचानक हुआ कि मैं कुछ नहीं कह पाई। फिर भी साहस करके मैंने माँ को उसके बारे में सब कुछ बता दिया। माँ ने समझाया—

"तेरी दो छोटी बहनें हैं। अगर तेरी शादी में ऊँच-नीच हुई तो परिणाम तुझे कम, उन्हें ज़्यादा भुगतना पड़ेगा। फिर वो लड़का अभी कुछ करता भी नहीं है, तेरे पिता से क्या कहूँ? कौन सा दोष बताकर इस रिश्ते को मना करूँ?"

माँ की बात में दम था। मुझे भी यही उचित लगा कि मैं यह रिश्ता स्वीकार कर लूँ और अपने प्यार का गला अपने ही हाथों घोंट दूँ।

कहने को तो प्रायः सारी शादियों में लड़कियों से सहमति पूछी जाती है, पर क्या असहमति प्रकट करना संभव होता है?

युवा हो चुकी लड़की का अस्तित्व परिवार में एक ज़िम्मेदारी की तरह हो जाता है, जिसका निपटारा जल्दी करना आवश्यक होता है। जब वह देखती है कि उसके लिए योग्य वर ढूँढने में पिता के कदम थकने लगे हैं, तब उसकी ज़बान पर "ना" बोलने की शक्ति ही कहाँ रहती है?

दहेज और शादी के खर्चों के लिए पाई-पाई जोड़ते हुए चिंतित पिता और भाई को देखकर कौन-सी लड़की होगी जो अपने भाग्य के सामने समर्पण न कर दे। लड़की की सहमति तो पूछी जाती है, पर उसमें "ना" कहने का बल ही कहाँ होता है।

मेरे पिता का आलोकजी को चुनना हर दृष्टि से सही साबित हुआ। उन्होंने मुझे जीवन की सारी खुशियाँ दीं, और मैं उन्हें बहुत प्यार करती हूँ।

लेकिन आज...

मैं अपनी आँखें उसके चेहरे से हटा नहीं पा रही थी, पर उसने जैसे मुझे देखकर भी नहीं देखा—जैसे पहचानता ही न हो।

अपराधबोध से दबी मैं सोचने लगी—शायद भगवान ने मुझे उससे माफी माँगने का मौका दिया है।

"कैसे हो?" मैंने पूछा।

"ठीक हूँ," उसने कहा और फिर हाथ में पकड़ी मैगज़ीन में खो गया।

"बहुत नाराज़ हो?"

बाकी अगली कड़ी में...

संतोष कुमार अकवि
पटना

भारतीय युवा पीढ़ी का भटकता उद्देश्य

भारतीय युवा पीढ़ी अपने उद्देश्य से भटक कर भौतिक आकर्षण की ओर उन्मुख हो रही है।भारतीय ज्ञान और बौद्धिक क्षमता का लोहा दुनिया को मनवाने वाली हमारे पूर्वजों की आज की पीढ़ियां सोशल मीडिया की चकाचौंध में इस तरह खो रही हैं कि उन्हें अपने आने वाले भविष्य का परिणाम ही नहीं दिख रहा है।

आज फेसबुक, यूट्यूब से पैसे कमाने के चक्कर में हमारे अनुसंधानात्मक दिमाग पर ताले लग गए हैं।जहां चीन के युवा उड़ने वाली टैक्सी, मानव रहित गाड़ियां, 500 किमी प्रति घंटे की रफ्तार वाली ट्रेन बनाने में लगे हुए हैं, वहीं भारत के युवा अपने पूर्वजों की दुकानें संभाल रहे हैं।

जब तक हम अपना खुद का विजन और लक्ष्य निर्धारण नहीं कर लेते,जब तक हम रोटी, कपड़ा और 5 मकान की सोच से ऊपर नहीं उठ जाते,तब तक न तो हमारा अस्तित्व और न ही हमारे सपनों के भारत का अस्तित्व नज़र आएगा।

संदेश: "अपनी सोच को ऊँचा उठाओ, अपनी क्षमता को पहचानो, और भारत को फिर से विश्वगुरु बनाने में योगदान दो।"

श्री चन्द बरनवाल
नौतनवा, महाराजगंज, उत्तर प्रदेश

Supins™
Pipe Fittings & Water Storage Tank
महंगा नहीं, अच्छा लगाइए

प्रो० : प्रभात बरनवाल

SHREE ENTERPRISES
Near Pyare Lal ka Bagh, Biskoman Colony,
Patna City, Patna-800007

डीलर और डिस्ट्रीब्यूटर के लिए संपर्क करें :-
मो० : 9334964602, 94733 03500

सावन 2025: बरनवाल समाज की एकता, संस्कृति और नारी शक्ति का उत्सव

सावन का महीना केवल बारिश नहीं लाता, यह रंगों 🎨, रसों 🪔 और रिश्तों की ख़ुशबू 🌺 भी साथ लाता है। वर्ष 2025 में सावन का महीना बरनवाल समाज के लिए केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं रहा, बल्कि यह समाज की एकता 🫶, सांस्कृतिक गौरव 🏵️ और नारी शक्ति 💪 का प्रतीक बन गया।

इस वर्ष सावन के पावन अवसर पर गोपीगंज से लेकर कोडरमा, कतरास, समस्तीपुर, शेखपुरा, गिरिडीह, देवघर, झुमरीतिलैया, विष्णुगढ़, आसनसोल, बोकारो, हजारीबाग, नवादा सहित देश के अनेक हिस्सों में सावन महोत्सव का भव्य आयोजन ✨ किया गया।

पटना और पटना सिटी 🏙️ में भी बरनवाल समाज की महिलाओं ने इस अवसर पर बढ़-चढ़कर भाग लिया। हर आयोजन में पारंपरिक गीत-संगीत 🎶, सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ 🎭, श्रृंगार प्रतियोगिता 💄 और सामूहिक मंगलकामनाओं 🖊️ का अद्भुत समागम देखने को मिला।

महिलाओं ने एक-दूसरे को गले लगाकर 🤗 समाज की समृद्धि 💰, देश की तरक्की 📈 और परिवारों की खुशहाली 🏡 की कामना की। भगवान भोलेनाथ 🙏 से यह प्रार्थना की गई कि वे बरनवाल समाज के हर परिवार, महिला, पुरुष, बच्चे 👨‍👩‍👧 और बुजुर्ग पर अपनी कृपा बनाए रखें।

साथ ही यह भी संकल्प लिया गया कि हर वर्ष सावन महोत्सव को और भी भव्य और संगठित रूप से मनाया जाएगा, ताकि समाज में आपसी प्रेम ❤️, सहयोग और सांस्कृतिक चेतना 💡 बनी रहे।

सावन 2025 वास्तव में **बरनवाल समाज** के लिए एक **प्रेरणादायक अध्याय** बन गया — जहाँ **परंपरा**, **प्रेम** और **परिवर्तन** एक साथ दिखे। 🌈💐

कोमल बरनवाल, पटना

"सावन के उल्लास, रंगों और अपनत्व से भरे इन सुंदर क्षणों की कुछ अनमोल झलकियाँ।"

कहानी: "सहारा भुगतान मात्र पचास हजार..." संजीत मोदी

साल 2010...
बिहार के एक छोटे से गांव में रहने वाले **रामलाल ने बड़ी उम्मीदों से सहारा में पैसा** लगाया था। उनकी चार बेटियां थीं, एक बीमार पत्नी और सपना – एक छोटा सा घर। उसने जीवनभर सब्ज़ी बेच- बेचकर जो ₹2 लाख जोड़े थे, वो उसने सहारा में इसलिए लगाए क्योंकि लोगों ने कहा था – "सरकारी मान्यता है, पैसा सुरक्षित है।"

रामलाल अकेला नहीं था। देश भर के लाखों लोगों ने उसी भरोसे के साथ अपनी ज़िंदगी की कमाई सहारा में लगाई।
किसी ने बेटी की शादी के लिए, किसी ने इलाज के लिए, किसी ने बच्चों की पढ़ाई के लिए।

फिर एक दिन ख़बर आई —
"सहारा कंपनी अब पैसा नहीं दे रही।"

रामलाल सोचता रहा —
"कैसे नहीं दे रही? सरकार तो देख रही है न...?"
लेकिन सरकार ने क्या किया?
सिर्फ वादे दिए —
"प्रक्रिया चल रही है...",
"जल्दी मिलेगा..."
और फिर... तारीख पे तारीख।

साल 2022, रामलाल अब बूढ़ा हो गया था।
दिल्ली के जंतर-मंतर पर तीन दिन तक खड़ा रहा। भीड़ में उसके जैसे हजारों थे —
बेटियाँ भी थी, जिनकी शादी रुक गई थी।
माएं थीं, जो बेटों के इलाज के लिए रो रही थीं।
किसान थे, जो अपने खेत बेचकर निवेश कर बैठे थे।

सब चिल्ला रहे थे —
"सहारा हमारा पैसा दो!"

2025
सरकार ने कहा — "पचास हज़ार मिलेंगे, बाक़ी वैधता सिद्ध करो।"
रामलाल की आँखें भर आईं।

उसने सोचा —
"क्या मेरी बीस साल की मेहनत की वैधता अब भी सिद्ध करनी है?"

उधर सहारा की करोड़ों की संपत्तियाँ खड़ी थीं –
सरकार देख रही थी, मगर बेच नहीं रही।
दोषी खुले घूम रहे थे,
और रामलाल जैसे लोग... रोज़ थोड़ा-थोड़ा मर रहे थे।

रामलाल की कहानी आज अकेली नहीं है।
यह कहानी है उस करोड़ों निवेशकों की,
जो लोकतंत्र में न्याय की भीख माँग रहे हैं।

क्या यह देश में आम आदमी की जगह इतनी छोटी है?

जब जनता के पैसे से बनी इमारतों के सामने
वही जनता भूखे खड़ी हो,
तो ये सिर्फ धोखा नहीं – **अपराध** है।

अब वक्त है – सिर्फ रोने का नहीं, लड़ने का।

शांति से। संगठन में। हक से।

"अब जो हमारा पैसा दिला सके – वही नेता है,
जो हमारी बात न सुने – वो सत्ता के लायक नहीं।"

आपका साथी संघर्ष में,
संजीत मोदी
(सहारा निवेशक, राष्ट्रीय संयुक्त सचिव,
विश्व भारती जनसेवा संस्थान)

अहिबरन मेधा सम्मान समारोह सह बरन प्रेरणापुंज सम्मान समारोह एवं वार्षिक योजना सह आम सभा 2025

गया नगर बरनवाल सेवा समिति के तत्वावधान में हरिदास सेमिनरी स्थित ऑडिटोरियम में अहिबरन मेधा सम्मान समारोह, बरन प्रेरणापुंज सम्मान समारोह एवं वार्षिक योजना सह आमसभा का भव्य आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन केंद्रीय मंत्री श्री **जीतन राम मांझी**, बरनवाल वैश्य महासभा के प्रदेश अध्यक्ष सह जदयू महानगर जिलाध्यक्ष **राजकुमार प्रसाद उर्फ राजू बरनवाल**, **इंजीनियर अवधेश कुमार** सहित मंचासीन अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया।

स्वागत उद्बोधन में श्री राजू बरनवाल ने सभी आगंतुक बरनवाल बंधुओं का अभिनंदन करते हुए समाज की एकता और प्रगति पर बल दिया। उन्होंने मेधावी विद्यार्थियों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ देते हुए उन्हें अपने क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

मुख्य अतिथि श्री जीतन राम मांझी ने BPSC, दरोगा परीक्षा, NEET, IIT, मैट्रिक और इंटरमीडिएट में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाले समाज के प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को **प्रशस्ति पत्र**, **ट्रॉफी**, **स्मृति चिन्ह** एवं **अंगवस्त्र** भेंट कर सम्मानित किया।

अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि शिक्षा ही समाज और राष्ट्र की प्रगति का सशक्त माध्यम है। उन्होंने विशेष रूप से बेटियों की शिक्षा में हो रही प्रगति की सराहना की और छात्रों को अनुशासन व निरंतर अध्ययन की सलाह दी।

उन्होंने यह भी बताया कि बेरोजगारी को दूर करने के लिए कौशल विकास को बढ़ावा दिया जा रहा है। साथ ही, उन्होंने यह संदेश दिया कि शिक्षित व्यक्ति को केवल अपने लिए नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के लिए भी चिंतन करना चाहिए।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में **अध्यक्ष प्रेम प्रकाश पवन**, **सचिव राकेश कुमार**, **कोषाध्यक्ष विक्की बरनवाल**, **महेंद्र प्रसाद**, **जितेंद्र कुमार**, **कंचन कुमार**, **विकास रंजन**, **उत्तम बरनवाल**, **संजय बरनवाल**, **ममता बरनवाल**, **अभिषेक राज** सहित समाज के कई सक्रिय कार्यकर्ताओं एवं बड़ी संख्या में बरनवाल समाज के लोगों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम सामाजिक समर्पण, शिक्षा के प्रति जागरूकता और युवाओं के उत्साहवर्धन का जीवंत प्रतीक बना।

THE PATH OF NEVER RETURN Part- 01

(Long Story)

There was once a modern and highly developed city.

In that city lived a young man named Vir.

Vir's life was simple but peaceful. He worked as a security guard in a special research laboratory. This was no ordinary lab — here, scientists performed secret experiments and built advanced military weapons.

Vir had a close friend named Arnav, who worked with him as another guard. Unlike Vir, Arnav was often worried and stressed about life. Vir, however, was happy with what little he had. His salary was not big, but he never complained.

Many people in the lab wondered how Vir could be so cheerful while earning so little. But Vir's nature was different — he found happiness in small things.

- Vir's Daily Life

Every morning, Vir woke up early, got ready quickly, and walked to the lab. His house was not far from work, so he preferred to go on foot.

On his way, he always saw stray dogs on the streets. Vir loved dogs very much. Every day, he brought them some food and treated them kindly. The dogs also liked him and trusted him. Whenever he passed by, they would run up to greet him.

-

One day, Vir woke up later than usual. He rushed to get ready and hurried towards the lab. But on the way, he noticed a dog lying in the corner of the street, injured and weak.

Vir stopped. He thought to himself:

"I'm already late for work... but if I don't help this dog now, it might die."

He gently picked up the dog and took it to a nearby animal clinic.

The doctor checked the dog's leg and said:

"Its leg is hurt badly. It's in pain and having trouble walking."

Vir said, "Please treat it right now."

The doctor cleaned the wound, applied medicine, and wrapped a bandage around the leg. Vir then carried the dog outside, placed it in a safe corner, and gave it some food.

By now, half of the day was gone.

- When Vir finally reached the lab, Arnav was already on duty. As soon as he saw Vir, Arnav ran to him and asked:

"Why are you so late today?"

Vir smiled and replied, "It's just a small problem. Nothing serious."

Arnav shook his head. "The manager is really angry. He told me to send you to him as soon as you arrive."

Vir sighed. "Alright, I'll go meet him."

-

Vir went to the manager's office.

The manager asked, "Why have you

come so late?"

Vir explained about the injured dog and how he had taken it to the clinic.

"That's good of you," the manager said, "but rules are rules. You still came late, so there has to be some action."

Vir calmly replied, "That's fine, sir. If you want to cut my salary, I have no problem."

The manager shook his head. "No, this is your first mistake. I will not cut your salary. Instead, I am changing your shift. From today, you will work at night."

Vir frowned. "But sir, night duty will be hard for me to adjust to."

"You are a responsible person," the manager said firmly. "That is why I think you are suitable for this shift."

Vir left the office and told Arnav, "My shift has changed. I will now work nights, not with you."

Arnav looked concerned. "Will it be difficult?"

Vir shrugged. "Not really. It will just take some time to adjust. I'm fine."

-

That night, Vir reported for his first night shift. The lab was quiet. There was no one else around, only the sound of his footsteps echoing in the empty corridors.

The silence made him uneasy, but he had no choice.

Some time later, while patrolling, he heard a loud noise from inside the lab. He quickly ran towards the sound and took the lift to the upper floor.

When he arrived, he was shocked — some scientists and workers were lying unconscious on the floor. He tried to wake them, but none responded. When he turned one of them over, he saw blood on their clothes.

Fear gripped him. He stepped back, his hands trembling.

-Suddenly, all the lights went out. The lab was plunged into darkness. Vir decided to leave quickly, but the lift had stopped working because of the power cut. He turned towards the stairs.

While searching for the way, he somehow ended up in an unfamiliar corridor. He turned on his torch and found himself in a strange room.

By accident, he bumped into a wall, and some cardboard boxes fell over. His torch rolled away. As he picked it up, he noticed something behind the fallen boxes — a hidden doorway.

Curious and cautious, he stepped through it.

- Vir entered another laboratory — one that seemed secret and hidden. A bright light shone from a large screen displaying details about advanced weapons.

As he walked closer, a table lit up with a blue glow, and a mechanical voice said:

"Password processing starts."

To be continued...

What's the meaning of the voice?

How sudden Vir's life change?

Who killed all the staffs of the lab?

Yash Vardhan
Motihari

श्रद्धांजलि – स्वर्गीय श्री भोला प्रसाद वर्णवाल जी

शेखपुरा ने एक ऐसे महान व्यक्तित्व को खो दिया है, जिन्होंने मेहनत, ईमानदारी और समर्पण से अपना जीवन बिताया। स्वर्गीय श्री भोला प्रसाद वर्णवाल जी न केवल करोड़पति व्यवसायी रहे, बल्कि समाज में अपनी नेकदिली के लिए भी जाने जाते थे। एलआईसी एजेंट के रूप में शुरुआत कर उन्होंने अपनी मेहनत से शानदार मकान बनाए और अपने परिवार का पालन-पोषण किया। दुर्भाग्यवश, वृद्धावस्था में उन्हें अपनों से ही वह सम्मान नहीं मिला, जिसके वे हकदार थे। संपत्ति बंटवारे के बाद बेटों ने उन्हें घर से निकाल दिया। बेटियों ने सहारा दिया, लेकिन अंततः वे वृद्धा आश्रम में रहने को मजबूर हुए। यह घटना समाज के लिए एक पीड़ादायक और शर्मनाक उदाहरण है। आज उनके निधन से पूरा वर्णवाल समाज शोक में है। उनका संघर्ष, स्वाभिमान और जीवन यात्रा हमें यह सिखाती है कि मेहनत से दौलत कमाई जा सकती है, लेकिन असली संपत्ति परिवार का प्रेम और सम्मान है। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांति मिले और परिवार को इस अपूरणीय क्षति को सहने की शक्ति प्रदान हो।

भावभीनी श्रद्धांजलि

इनवर्टर में करंट लगने से किराना व्यवसायी की मौत

गाजीपुर | बहरियाबाद थाना क्षेत्र

बहरियाबाद थाना क्षेत्र के भाला खुर्द गांव में रविवार को एक दुखद हादसे में एक किराना व्यवसायी की करंट लगने से मौत हो गई। मृतक की पहचान दीपक बरनवाल (36 वर्ष) के रूप में हुई है। जानकारी के अनुसार, दीपक बरनवाल घर में इनवर्टर की बैटरी में पानी डाल रहे थे और उसी दौरान प्लग की तार में जमे कार्बन को साफ कर रहे थे। इसी दौरान अचानक बिजली आ गई और वे करंट की चपेट में आ गए। परिजन उन्हें तत्काल रायपुर स्थित एक निजी अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया।

मृतक के बड़े भाई लाल बहादुर बरनवाल की तहरीर पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। थानाध्यक्ष दिनेश चंद्र पटेल ने बताया कि घटना की जांच की जा रही है।

मृतक दीपक बरनवाल तीन भाइयों में सबसे छोटे थे। एक भाई की पहले ही मृत्यु हो चुकी है, जबकि दूसरा भाई सुल्तानगंज (बिहार) में नौकरी करता है। दीपक अपने पीछे पत्नी खुशबू देवी, मां रमावती देवी और तीन छोटे बच्चों को छोड़ गए हैं — विराट (9), सोना (6) और अथर्व (2)।

गांव में इस घटना के बाद शोक का माहौल है।

महत्वपूर्ण सूचना

आगामी माह हमारी भारतीय संस्कृति में विशेष अर्थवान है। वर्षाऋतु के समापन एवं शरदऋतु के आगमन के साथ ही हमारे जीवन में सरसता बरसाने के लिए तीज-त्योहाहों का आगमन हो जाता है। हम अपनी उत्सवधर्मिता के साथ हम अपने परिवार-रिश्तेदारों तथा ईष्ट-मित्रों के साथ इनमें उत्साहपुर्वक भाग लेते हैं। ऐसे माहौल में हम भी सुरूचिसंपन्न चीजें देखना, पढ़ना पसंद करते हैं, जो इस पत्रिका में होंगी। इसलिए "बरनवाल डायरेक्टरी पत्रिका" का सितंबर अंक "पूजा विशेषांक" एवं अक्टूबर अंक "दिपावली विशेषांक" के रूप में होगा। अतः अनुरोध है कि इससे संबंधित सामग्री, विज्ञापन आदि उपलब्ध करायें। ध्यातव्य है कि हमारी यह ई-पत्रिका न सिर्फ देश में, विदेशों में भी हजारों लोगों तक पहुँचेगी। इससे आपका संवाद एक साथ वृहत् समाज से संभव होगा।

बरनवाल डायरेक्ट्री के BD GOLD सदस्य बनने के लाभ

1. बरनवाल डायरेक्ट्री ई पत्रिका की आजीवन सदस्यता ।
2. ई पत्रिका का लिंक आपके मोबाइल एवं इमेल पर आजीवन भेजा जाएगा।
3. ई पत्रिका में आधा पेज का व्यवसायिक विज्ञापन 1 माह के लिए मुफ्त।
4. ई पत्रिका में वैवाहिक विज्ञापन 3 माह के लिए मुफ्त।
5. बरनवाल समाज में होने वाले सभी तरह के सामाजिक, राजनीतिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक घटनाओं कि जानकारी मिलती रहेगी।
6. BD GOLD की आजीवन सदस्यता शुल्क केवल 2100/- है ।

BARANWAL DIRECTORY
DEEPAK KUMAR BARANWAL
AC. N.: **440710310000355**
IFSC: **BKID0004407**
BRANCH: **RAJENDRA NAGAR, PATNA**
UPI : 9473303500@upi

SCAN & PAY

BD GOLD सदस्यता शुल्क 2100/-
इस एकाउंट में जमा करें एवं 9473303500 पर डिटेल्स भेज दें।